# विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन

*डॉ. श्रीमती शिवा पांडे

प्रत्येक मानव के जीवन में कुछ न कुछ अनुभव जरूर होते हैं जो समय की गति के साथ–साथ बढ़ते जाते है। इन्हीं अनुभवों से कुछ सामान्य सिद्धांत जन्म लेते हैं जो मानव के व्यवहार को निर्देशित करते हैं तथा समस्त जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते हैं एवं उनके पद प्रदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, जिन्हे मूल्य के नाम से जाना जाता है। व्यक्ति का मूल्य इस बात का दर्पण होता है कि वे अपनी सीमित शक्ति एवं समय में क्या करना चाहता है। मूल्य व्यक्ति की रूचियों, प्रेरणाओं एवं अभिवृत्तियों की ओर इंगित करते है। मूल्यों की दार्शनिक परिभाषा इसे भावना संवेग, रूचियों एवं अभिरूचियों के संदर्भ में स्वीकार करती है। सभी सुखदायी भावनायें एंव सिद्धांत मूल्य में निहित हैं। मूल्यों के मनोवैज्ञानिक स्वरूप की व्याख्या करते हुए मर्फी, मर्फी एवं न्यूकोम्बे का मत है कि मूल्य सामान्यरूप में किसी उद्देश्य की प्राप्ति का एक विन्यास है। अलपोर्ट के अनुसार –मूल्य वह क्रिया है जो किसी उद्दीपक से उद्दीप्त होती है। एवरैट के अनुसार मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है। कलुकहोन के अनुसार – मूल्य इच्छाओं के वे प्रत्यय हैं जो चयनात्मक व्यवहार के लिए महत्वपूर्ण होते है। ये एक विशेष प्रकार की अभिवृत्तियां होती हैं जो प्रतिमानों के रूप में कार्य करती हैं तथा जिसके द्वारा निर्णयों का मूल्यांकन होता हैं। अतएव विद्वानों की दृष्टि में मूल्य, भावनाओं, विन्यासों, क्रियाओं या अभिवृत्ति की उत्पत्ति है।

**वातावरण और मूल्य का संरक्षण** :– वातावरण का संरक्षण समय की आवश्यकता है। यूनेस्कों सहित विश्व के लेखक इस बड़ी ज्वलंत समस्या के प्रति अपनी चिंतायें अभिव्यक्त करते रहे है। 1972 में यू.के. में पर्यावरण शिक्षा के राष्ट्रीय संघ के निर्माण के बाद और यू.एस.ए. में 1972 के पर्यावरण संरक्षण कानून पश्चात् विश्वस्तर की जागृति उन साधनों का पता लगाने के लिये जन्म लिया कि कैसे प्रकृति की सुरक्षा की जावे तथा विज्ञान की सहायता से वनों की कटाई रोकी जाये। 1971 में यूनेस्कों में स्टाक होम कान्फरेंस का आयोजन किया गया और ज्यादा वक्त प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक उपयोग तथा उनके संरक्षण पर डाला गया। यह स्थापित मान्यता है कि बच्चे का भाषण और क्रियाकलाप वातावरण प्रतिबिम्बित करते हैं जिसका कि वह हिस्सा होता है। जिस प्रकार के घर में वह पाला जाता है, बहुत ज्यादा मात्रा में व्यवहार का निर्धारण करता है। जैसे–वह विद्यालय जाता है। अब हम चाहते हैं कि हमारा बच्चा निस्वार्थी बने, स्वावलम्बी बने, हमें ऐसा वातावरण अवश्य प्रदान करना चाहिए जो उनमें प्राथमिक मूल्य भर सकें।

मूल्यों के मापन की विधि :– मुख्य रूप से मूल्य–मापन की दो विधियाँ उपलब्ध है–

**1.मैरिस विधि**– इसके अंतर्गत विभिन्न मानवीय मूल्यों का मापन किया जाता है ।

**2. आलपोर्ट, वर्नन एव लिण्डजे विधि** – इसके अंतर्गत व्यक्ति के छः मूल्यों का अध्ययन किया जाता है। आलपोर्ट, वर्नन के मूल्य अध्ययन द्वारा छः क्षेत्रों में व्यक्ति की रूचियों, प्रेरणाओं तथा मूल्यों का मापन किया जाता है।

**आलपोर्ट, वर्नन तथा लिण्डजे का मूल्य अध्ययन** :–आलपोर्ट, वर्नन, लिण्डजे का मूल्य–अध्ययन मूल रूप से स्प्रेंगर के वगीकरण पर आधारित है। स्प्रेंगर का विश्वास था कि व्यक्ति के वगीकरण था कि व्यक्ति के मूल्यों से उसका व्यक्तित्व जाना जा सकता है। इसलिए उसने अपनी पुस्तक में छः प्रकार के व्यक्तियों का उल्लेख किया अतएव इसी वर्गीकरण को आधार मानते हुए आलपोर्ट, वर्नन एवं लिण्डजे ने अपने मूल्य–अध्ययन में छः प्रकार के मूल्यों को सम्मिलित किया था

**शोध का क्षेत्र** :–प्रस्तुत शोध जबलपुर संभाग के 50 हायर सेकेण्डरी स्कूलो में अध्ययनरत् विद्यार्थियों में किया गया है। 25 शहरी एवं 25 ग्रामीण विद्यालयों से 1200 विद्यार्थी शोध कार्य में लिए गए है।

**उद्देश्य** :– 1.शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। 2. शहरी तथा ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। 3. शहरी तथा ग्रामीण छात्राओं की पर्यावरण के प्रति मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पनाएँ** :– 1. शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। 2. शहरी तथा ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। 3. शहरी तथा ग्रामीण छात्राओं की पर्यावरण के प्रति मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**शोध विधि** :– प्रस्तुत शोध कार्य के लिए आर्दश मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

**उपकरण** :–प्रस्तुत शोध में मूल्यों के मापन के लिए शशिप्रभा दुबें एवं डॉ. एन.एन. श्रीवास्तव द्वारा बनाई गई मापनी का प्रयोग किया गया है इस मापनी में कुल 25 प्रश्न है।

*शासकीय कन्या उच्च. माध्यमिक विद्यालय, ब्यौहारबाग, जबलपुर

**न्यादर्श** :–प्रस्तुत शोध कार्य में हायर सेकेण्डरी स्कूलो में अध्ययनरत् 1200 विद्यार्थियों को निम्नानुसार लिया गया है।

| विद्यार्थी | शहरी | ग्रामीण | कुल |
|---|---|---|---|
| छात्र | 300 | 300 | 600 |
| छात्राएँ | 300 | 300 | 600 |
| कुल | 600 | 600 | 1200 |

**विश्लेषण एवं व्याख्या** :– उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थीयों एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों के प्राप्तांकों का मध्यमान में अंतर 10.72 है। सांख्यिकीय दृष्टिकोण से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 18.20 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान 2.58 से अधिक है। अतः दोनों समूहों में साख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है। अतः विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति मूल्य ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है।

**विश्लेषण एवं व्याख्या** :– उपरोक्त तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी छात्रों एवं ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों के प्राप्तांकों का मध्यमान में अंतर 8.80 है। सांख्यिकीय दृष्टिकोण से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 10.16 है जो कि 0.01 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान 2.59 से अधिक है। अतः दोनों समूहों में साख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है। विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी छात्रों में पर्यावरण के प्रति मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है।

**तालिका–1 शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति मूल्य संबंधी परिणामों का तुलनात्मक अध्यन**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मध्यमान मानक श्रुटि | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी विद्यार्थी | 600 | 29.0 | 11.65 | 0.476 | 18.20 | सार्थक |
| ग्रामीण विद्यार्थी | 600 | 18.28 | 8.51 | 0.347 | | अंतर है। |

स्वतंत्रता के अंश 1198 — 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए मान 1.96
0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए मान 2.58

**तालिका–2 पर्यावरण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण छात्रों में मूल्य संबंधी परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मध्यमान मानक श्रुटि | क्रांतिक अनुपात | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी छात्र | 300 | 28.37 | 11.62 | 1.671 | 10.16 | सार्थक |
| ग्रामीण छात्र | 300 | 19.57 | 9.49 | 0.548 | | अंतर है। |

स्वतंत्रता के अंश 598 — 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए मान 1.96
0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए मान 2.59

**तालिका–3 पर्यावरण के प्रति शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं में मूल्य संबंधी परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन**

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मध्यमान मानक श्रुटि | कांतिक अनुपात | सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शहरी छात्राओं | 300 | 29.63 | 11.64 | 0.672 | 16.01 | सार्थक |
| ग्रामीण छात्राओं | 300 | 17.01 | 07.17 | 0.414 | | अंतर है। |

स्वतंत्रता के अंश 598 — 0.05 स्तर पर सार्थकता के लिए मान 1.96
0.01 स्तर पर सार्थकता के लिए मान 2.59

**विश्लेषण एवं व्याख्या** :–उपरोक्त तालिका क्रमांक 3 में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि शहरी छात्राओं एवं ग्रामीण छात्राओं की पर्यावरण के प्रति मूल्यों के प्राप्तांकों का मध्यमान में अंतर 12.62 है। सांख्यिकीय दृष्टिकोण से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 16.01 प्राप्त हुआ है जो कि 0.01 स्तर के न्यूनतम निर्धारित मान 2.59 से अधिक है। अतः दोनों समूहों में साख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है। विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि शहरी छात्राओं में पर्यावरण के प्रति मूल्य ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है।

**निष्कर्ष** :–1. शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया है विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति मूल्य ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा सकारात्मक है।

2. शहरी तथा ग्रामीण छात्रों की पर्यावरण के प्रति मूल्यों में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी छात्रों में पर्यावरण के प्रति मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा सकारात्मक है।3. शहरी तथा ग्रामीण छात्राओं की पर्यावरण के प्रति मूल्यों में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ है। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि शहरी छात्राओं में पर्यावरण के प्रति मूल्य ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक है।

**शैक्षणिक योगदान** :—निष्कर्षो से ज्ञात होता है कि अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अभाव है। निष्कर्षो से ज्ञात होता है कि शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की तुलना में पर्यावरण के प्रति मूल्य अधिक सकारात्मक है। तथा सांख्यिकीय दृष्टिकोण से भी दोनों समूहों में सार्थक अंतर पाया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण को सुरक्षित रखने हेतु विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता में शिक्षकों के मार्गदर्शन की आवश्यकता है। शहरी क्षेत्रों में प्रदूषण के कारण पर्यावरण क्षति लगातार हो रही है। पर्यावरणीय संसाधन अब केवल ग्रामीण अंचलों में ही उपलब्ध है। अतः इनको सुरक्षित रखने के लिए विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना आवश्यक है। इस हेतु संस्थाऐ अपने विद्यालयों में गोष्ठी, पर्यावरण गीत, पर्यावरण रैली, वन महोत्सव, पर्यावरण में लेखन प्रतियोगिता आदि के माध्यम से प्रयास कर सकते है।

## संदर्भ ग्रंथ

*मार्कण्डेय, दिलीप कुमार ,परिचयात्मक पर्यावरण प्रदूषण एवं नियंत्रण, व राजवैध नीलिमा स्टैण्डर्ड पब्लिसशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली – 6 (1996) *रघुवंशी डॉ. अरूण एवं डॉ. , पर्यावरण तथा प्रदूषण मध्यप्रदेश हिन्दी चन्द्रलेखा ग्रंथ अकादमी (1990) *सक्सेना, डॉ. हरिमोहन , पर्यावरण एवं प्रदूषण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर (1995) *सेंगर डॉ. शिवराज सिंह , पर्यावरण शिक्षा, साहित्य प्रकाशन आगरा (1996) *शर्मा आर. ए. पर्यावरण शिक्षा, सूर्या पब्लिकेशन मेरठ (1997) *शर्मा डॉ. बी.एल., पर्यावरण भूगोल साहित्य प्रकाशन आगरा, (1992) *शर्मा श्रीमति विमलेश , पर्यावरणीय शिक्षा, सरस्वती प्रकाशन, जबलपुर *त्रिवेदी डॉ. पी. , पर्यावरण और व्यवहार शिक्षा शोध पत्रिका शिक्षा शोध संस्थान निरालानगर लखनऊ 1999 *उपाध्याय डॉ. राधाबल्लभ , पर्यावरण शिक्षा अग्रवाल प्रकाशन नई सड़क, आगरा 1998 *व्यास, हरिशचन्द्र , पर्यावरण शिक्षा, विद्या बिहार, नई दिल्ली 1992 *वर्मा, धर्मेन्द्र ,पर्यावरण म.प्र. हिन्दी अकादमी (1983–84) *अस्थाना, मधु एंव वर्मा किरण बाला , व्यक्तित्व मनोविज्ञान, प्रथम संस्करण – 1996 * भार्गव डॉ. महेश एवं श्रीवास्तव , डॉ. डी.एन. , आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन छठां * संस्कारण 1985, प्रकाशक भार्गव बुक हाउस, आगरा। जायसवाल सीताराम , समायोजन का मनोविज्ञान *कपिल डॉ. एच.के. , सांख्यिकी के मूलतत्व, प्रथम संस्करण 1978 प्रकाशक हरप्रसाद भार्गव। *सिंह अरूण कुमार, उच्चतरसामान्य मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास संस्करण – तृतीय संशोधन 2002, पुनः मुद्रण दिल्ली – 2005 *श्रीवास्तव, डॉ. डी.एन. , व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, सप्तम संस्करण – 2005, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।